हिंदी

लोकवाणी

नौवीं कक्षा

शासन निर्णय क्रमांक : अभ्यास-२११६/(प्र.क्र.४३/१६) एसडी-४ दिनांक २५.४.२०१६ के अनुसार समन्वय समिति का गठन किया गया । दि. ३.३.२०१७ को हुई इस समिति की बैठक में यह पाठ्यपुस्तक निर्धारित करने हेतु मान्यता प्रदान की गई ।

हिंदी

लोकवाणी

नौवीं कक्षा

मेरा नाम _____ है ।

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे

आपके स्मार्टफोन में 'DIKSHA App' द्वारा, पुस्तक के प्रथम पृष्ठ पर Q.R.Code के माध्यम से डिजिटल पाठ्यपुस्तक एवं प्रत्येक पाठ में अंतर्निहित Q.R.Code में अध्ययन अध्यापन के लिए पाठ से संबंधित उपयुक्त दृक-श्राव्य सामग्री उपलब्ध कराई जाएगी ।

प्रथमावृत्ति : २०१७

दूसरा पुनर्मुद्रण : २०२०

© **महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे – ४११००४**

इस पुस्तक का सर्वाधिकार महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के अधीन सुरक्षित है। इस पुस्तक का कोई भी भाग महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के संचालक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता।

मुख्य समन्वयक

श्रीमती प्राची रविंद्र साठे

हिंदी भाषा समिति

डॉ.हेमचंद्र वैद्य – अध्यक्ष
डॉ.छाया पाटील – सदस्य
प्रा.मैनोद्दीन मुल्ला – सदस्य
डॉ.दयानंद तिवारी – सदस्य
श्री संतोष धोत्रे – सदस्य
डॉ.सुनिल कुलकर्णी – सदस्य
श्रीमती सीमा कांबळे – सदस्य
डॉ.अलका पोतदार – सदस्य – सचिव

हिंदी भाषा अभ्यासगट

श्री रामहित यादव
श्रीमती माया कोथळीकर
श्रीमती रंजना पिंगळे
श्री सुमंत दळवी
डॉ. रत्ना चौधरी
सौ. वृंदा कुलकर्णी
डॉ. वर्षा पुनवटकर
श्रीमती रजनी म्हैसाळकर
श्रीमती पूर्णिमा पांडेय
श्रीमती अर्चना भुस्कुटे
डॉ. बंडोपंत पाटील
श्रीमती शारदा बियानी
श्री एन. आर. जेवे
श्रीमती निशा बाहेकर
डॉ. आशा वी. मिश्रा
श्रीमती मीना एस. अग्रवाल
श्रीमती भारती श्रीवास्तव
श्री प्रकाश बोकील
श्री रामदास काटे
श्री सुधाकर गावंडे
श्रीमती गीता जोशी
डॉ. शोभा बेलखोडे
डॉ.शैला चव्हाण
श्रीमती रचना कोलते
श्री रविंद्र बागव
श्री काकासाहेब वाळुंजकर
श्री सुभाष वाघ

प्रकाशक :

श्री विवेक उत्तम गोसावी

नियंत्रक

पाठ्यपुस्तक निर्मिती मंडळ

प्रभादेवी, मुंबई-२५

संयोजन :

डॉ.अलका पोतदार, विशेषाधिकारी हिंदी भाषा, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे

सौ. संध्या विनय उपासनी, विषय सहायक हिंदी भाषा, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे

मुखपृष्ठ : मयूरा डफळ

चित्रांकन : श्री राजेश लवळेकर

निर्मिति :

श्री सच्चितानंद आफळे, मुख्य निर्मिति अधिकारी

श्री राजेंद्र चिंदरकर, निर्मिति अधिकारी

श्री राजेंद्र पांडलोसकर,सहायक निर्मिति अधिकारी

अक्षरांकन : भाषा विभाग,पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे

कागज : ७० जीएसएम, क्रीमवोव

मुद्रणादेश : N/PB/2020-21/(0.80)

मुद्रक : Kanta Printers,Nagpur

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की **स्वतंत्रता,**
प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,
तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता
और अखंडता सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) **को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं ।**

राष्ट्रगीत

जनगणमन – अधिनायक जय हे
भारत – भाग्यविधाता ।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा,
द्राविड, उत्कल, बंग,
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधितरंग,
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिस मागे,
गाहे तव जयगाथा,
जनगण मंगलदायक जय हे,
भारत – भाग्यविधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे ।।

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है । सभी भारतीय मेरे भाई-बहन हैं ।

मुझे अपने देश से प्यार है । अपने देश की समृद्ध तथा विविधताओं से विभूषित परंपराओं पर मुझे गर्व है ।

मैं हमेशा प्रयत्न करूँगा/करूँगी कि उन परंपराओं का सफल अनुयायी बनने की क्षमता मुझे प्राप्त हो ।

मैं अपने माता-पिता, गुरुजनों और बड़ों का सम्मान करूँगा/करूँगी और हर एक से सौजन्यपूर्ण व्यवहार करूँगा/करूँगी ।

मैं प्रतिज्ञा करता/करती हूँ कि मैं अपने देश और अपने देशवासियों के प्रति निष्ठा रखूँगा/रखूँगी । उनकी भलाई और समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है ।

प्रस्तावना

प्रिय विद्यार्थियो,

आप नवनिर्मित लोकवाणी (नौवीं कक्षा) पढ़ने के लिए उत्सुक होंगे। रंग-बिरंगी, अति आकर्षक यह पुस्तक आपके हाथों में सौंपते हुए हमें अत्यधिक हर्ष हो रहा है।

हमें ज्ञात है कि आपको कविता, गीत, गजल सुनना प्रिय रहा है। कहानियों के विश्व में विचरण करना मनोरंजक लगता है। आपकी इन भावनाओं को दृष्टिगत रखते हुए कविता, गीत, दोहे, गजल, नई कविता, वैविध्यपूर्ण कहानियाँ, निबंध, हास्य-व्यंग्य, संवाद आदि साहित्यिक विधाओं का समावेश इस पुस्तक में किया गया है। ये विधाएँ केवल मनोरंजन ही नहीं अपितु ज्ञानार्जन, भाषाई कौशलों, क्षमताओं एवं व्यक्तित्व विकास के साथ-साथ चरित्र निर्माण, राष्ट्रीय भावना को सुदृढ़ करने तथा सक्षम बनाने के लिए भी आवश्यक रूप से दी गई हैं। इन रचनाओं के चयन का आधार आयु, रुचि, मनोविज्ञान, सामाजिक स्तर आदि को रखा गया है।

डिजिटल दुनिया की नई सोच, वैज्ञानिक दृष्टि तथा अभ्यास को 'श्रवणीय', 'संभाषणीय', 'पठनीय', 'लेखनीय', 'पाठ के आँगन में', 'भाषा बिंदु', विविध कृतियाँ आदि के माध्यम से पाठ्यपुस्तक में प्रस्तुत किया गया है। आपकी सर्जना और पहल को ध्यान में रखते हुए 'आसपास', 'पाठ से आगे', 'कल्पना पल्लवन' 'मौलिक सृजन' को अधिक व्यापक और रोचक बनाया गया है। डिजिटल जगत में आपके साहित्यिक विचरण हेतु प्रत्येक पाठ में 'मैं हूँ यहाँ' में अनेक संकेत स्थल (लिंक) भी दिए गए हैं। इनका सतत उपयोग अपेक्षित है।

मार्गदर्शक के बिना लक्ष्य की प्राप्ति नहीं हो सकती। अतः आवश्यक प्रवीणता तथा उद्देश्य की पूर्ति हेतु अभिभावकों, शिक्षकों के सहयोग तथा मार्गदर्शन आपके कार्य को सुकर एवं सफल बनाने में सहायक सिद्ध होंगे।

विश्वास है कि आप सब पाठ्यपुस्तक का कुशलतापूर्वक उपयोग करते हुए हिंदी विषय के प्रति विशेष अभिरुचि एवं आत्मीयता की भावना के साथ उत्साह प्रदर्शित करेंगे।

पुणे
दिनांक :- २८ अप्रैल २०१७
अक्षय तृतीया

(डॉ. सुनिल मगर)
संचालक
महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व
अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ पुणे-०४

* अनुक्रमणिका *

पहली इकाई

क्र.	पाठ का नाम	विधा	रचनाकार	पृष्ठ
१.	नदी की पुकार	गीत	सुरेशचंद्र मिश्र	१
२.	झुमका	वर्णनात्मक कहानी	सुशील सरित	३
३.	निज भाषा (पठनार्थ)	दोहा	भारतेंदु हरिश्चंद्र	७
४.	मान जा मेरे मन	व्यंग्यात्मक निबंध	रामेश्वर सिंह कश्यप	९
५.	किताबें कुछ कहना चाहती हैं	नई कविता	सफदर हाश्मी	१३
६.	'इत्यादि' की आत्मकहानी (पठनार्थ)	वर्णनात्मक निबंध	यशोदानंद अखौरी	१५
७.	छोटा जादूगर	संवादात्मक कहानी	जयशंकर प्रसाद	१९
८.	जिंदगी की बड़ी जरुरत है हार...!	नवगीत	प्रा. संतोष मडकी	२४

दूसरी इकाई

क्र.	पाठ का नाम	विधा	रचनाकार	पृष्ठ
१.	गागर में सागर	दोहा	बिहारी	२७
२.	मैं बरतन माँजूँगा	आत्मकथात्मक कहानी	हमराज भट्ट 'बालसखा'	२९
३.	ग्रामदेवता (पठनार्थ)	कविता	डॉ. रामकुमार वर्मा	३३
४.	साहित्य की निष्कपट विधा है-डायरी	वैचारिक निबंध	कुबेर कुमावत	३५
५.	उम्मीद	गजल	कमलेश भट्ट 'कमल'	३९
६.	सागर और मेघ	संवाद	राय कृष्णदास	४२
७.	लघुकथाएँ (पठनार्थ)	लघुकथा	ज्योति जैन	४६
८.	झंडा ऊँचा सदा रहेगा	प्रेरणा गीत	रामदयाल पांडेय	४८
	रचना विभाग एवं व्याकरण विभाग			५१

भाषा विषयक क्षमता

यह अपेक्षा है कि नौवीं कक्षा के अंत में विद्यार्थियों में भाषा विषयक निम्नलिखित क्षमताएँ विकसित हो ।

क्षेत्र	क्षमता
श्रवण	१. गद्य-पद्य विधाओं को रसग्रहण करते हुए सुनना/सुनाना । २. प्रसार माध्यम के कार्यक्रमों को एकाग्रता एवं विस्तारपूर्वक सुनाना । ३. वैश्विक समस्या को समझने हेतु संचार माध्यमों से प्राप्त जानकारी सुनकर उनका उपयोग करना । ४. सुने हुए अंशों पर विश्लेषणात्मक प्रतिक्रिया देना । ५. सुनते समय कठिन लगने वाले शब्दों, मुद्दों, अंशों का अंकन करना ।
भाषण-संभाषण	१. परिसर एवं अंतरविद्यालयीन कार्यक्रमों में सहभागी होकर पक्ष-विपक्ष में मत प्रकट करना । २. देश के महत्त्वपूर्ण विषयों पर चर्चा करना, विचार व्यक्त करना । ३. दिन-प्रतिदिन के व्यवहार में शुद्ध उच्चारण के साथ वार्तालाप करना । ४. पठित सामग्री के विचारों पर चर्चा करना तथा पाठ्येतर सामग्री का आशय बताना । ५. विनम्रता एवं दृढ़तापूर्वक किसी विचार के बारे में मत व्यक्त करना, सहमति-असहमति प्रगट करना ।
वाचन	१. गद्य-पद्य विधाओं का आशयसहित भावपूर्ण वाचन करना । २. अनूदित साहित्य का रसास्वादन करते हुए वाचन करना । ३. विविध क्षेत्रों के पुरस्कार प्राप्त व्यक्तियों की जानकारी का वर्गीकरण करते हुए मुखर वाचन करना । ४. लिखित अंश का वाचन करते हुए उसकी अचूकता, पारदर्शिता, आलंकारिक भाषा की प्रशंसा करना । ५. साहित्यिक लेखन, पूर्व ज्ञान तथा स्व अनुभव के बीच मूल्यांकन करते हुए सहसंबंध स्थापित करना ।
लेखन	१. गद्य-पद्य साहित्य के कुछ अंशों/परिच्छेदों में विरामचिह्नों का उचित प्रयोग करते हुए आकलनसहित सुपाठ्य, शुद्धलेखन करना । २. रूपरेखा एवं शब्द संकेतों के आधार पर लेखन करना । ३. पठित गद्यांशों, पद्यांशों का अनुवाद एवं लिप्यंतरण करना । ४. नियत प्रकारों पर स्वयंस्फूर्त लेखन, पठित सामग्री पर आधारित प्रश्नों के अचूक उत्तर लिखना । ५. किसी विचार, भाव का सुसंबद्ध प्रभावी लेखन करना, व्याख्या करना, स्पष्ट भाषा में अपनी अनुभूतियों, संवेदनाओं की संक्षिप्त अभिव्यक्ति करना ।
अध्ययन कौशल	१. मुहावरे, कहावतें, भाषाई सौंदर्यवाले वाक्यों तथा अन्य भाषा के उद्धरणों का प्रयोग करने हेतु संकलन, चर्चा और लेखन । २. अंतरजाल के माध्यम से अध्ययन करने के लिए जानकारी का संकलन । ३. विविध स्रोतों से प्राप्त जानकारी, वर्णन के आधार पर आकृति संगणकीय प्रस्तुति के लिए (पी.पी.टी. के मुद्दे) बनाना और शब्दसंग्रह द्वारा लघुशब्दकोश बनाना । ४. श्रवण और वाचन के समय ली गई टिप्पणियों का स्वयं के संदर्भ के लिए पुनःस्मरण करना । ५. उद्धरण, भाषाई सौंदर्यवाले वाक्य, सुवचन आदि का संकलन और उपयोग करना ।

	६. संगणक पर उपलब्ध सामग्री का उपयोग करते समय दूसरों के अधिकार (कॉपी राईट) का उल्लंघन न हो इस बात का ध्यान रखना । ७. संगणक की सहायता से प्रस्तुतीकरण और ऑन लाईन, आवेदन, बिल आदि का उपयोग करना । ८. प्रसार माध्यम/संगणक आदि पर उपलब्ध होने वाली कलाकृतियों का रसास्वादन एवं चिकित्सक विचार करना । ९. संगणक/ अंतरजाल की सहायता से भाषांतर/लिप्यंतरण करना ।
व्याकरण	१. पुनरावर्तन–कारक, वाक्य परिवर्तन एवं प्रयोग, काल परिवर्तन २ पर्यायवाची–विलोम, उपसर्ग–प्रत्यय, संधि (३) ३. विकारी, अविकारी शब्दों का प्रयोग (खेल के रूप में) ४. **अ.** विरामचिह्न (..., xxx, ., –०–) **ब.** शुद्ध उच्चारण प्रयोग और लेखन (स्रोत, स्त्रोत, शृंगार) ५. मुहावरे–कहावतें प्रयोग, चयन

शिक्षकों के लिए मार्गदर्शक बातें .....

अध्ययन–अनुभव देने से पहले पाठ्यपुस्तक में दिए गए अध्यापन संकेतों, दिशा–निर्देशों को अच्छी तरह समझ लें । भाषिक कौशलों के प्रत्यक्ष विकास के लिए पाठ्यवस्तु 'श्रवणीय', 'संभाषणीय', 'पठनीय' एवं 'लेखनीय' में दी गई हैं । पाठ पर आधारित कृतियाँ 'पाठ के आँगन' में आई हैं । जहाँ 'आसपास' में पाठ से बाहर खोजबीन के लिए है, वहीं 'पाठ से आगे' में पाठ के आशय को आधार बनाकर उससे आगे की बात की गई है । 'कल्पना पल्लवन' एवं 'मौलिक सृजन' विद्यार्थियों के भाव विश्व एवं रचनात्मकता के विकास तथा स्वयंस्फूर्त लेखन हेतु दिए गए हैं । 'भाषा बिंदु' व्याकरणिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है । इसमें दिए गए अभ्यास के प्रश्न पाठ से एवं पाठ के बाहर के भी हैं । विद्यार्थियों ने उस पाठ से क्या सीखा, उनकी दृष्टि में पाठ, का उल्लेख उनके द्वारा 'रचना बोध' में करना है । 'मैं हूँ यहाँ' में पाठ की विषय वस्तु एवं उससे आगे के अध्ययन हेतु संकेत स्थल (लिंक) दिए गए हैं । इलेक्ट्रॉनिक संदर्भों (अंतरजाल, संकेतस्थल आदि) में आप सबका विशेष सहयोग नितांत आवश्यक है । उपरोक्त सभी कृतियों का सतत अभ्यास कराना अपेक्षित है । व्याकरण पारंपरिक रूप से नहीं पढ़ाना है। कृतियों और उदाहरणों के द्वारा संकल्पना तक विद्यार्थियों को पहुँचाने का उत्तरदायित्व आप सबके कंधों पर है। 'पठनार्थ' सामग्री कहीं न कहीं पाठ को ही पोषित करती है और यह विद्यार्थियों की रुचि एवं पठन संस्कृति को बढ़ावा देती है। अतः 'पठनार्थ' सामग्री का वाचन आवश्यक रूप से करवाएँ ।

आवश्यकतानुसार पाठ्येतर कृतियों, भाषिक खेलों, संदर्भों, प्रसंगों का भी समावेश अपेक्षित है । आप सब पाठ्यपुस्तक के माध्यम से नैतिक मूल्यों, जीवन कौशलों, केंद्रीय तत्त्वों के विकास के अवसर विद्यार्थियों को प्रदान करें। क्षमता विधान एवं पाठ्यपुस्तक में अंतर्निहित प्रत्येक संदर्भों का सतत मूल्यमापन अपेक्षित है । आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि शिक्षक, अभिभावक सभी इस पुस्तक का सहर्ष स्वागत करेंगे ।